साहित्य एवं भाषा में एआई का महत्व

अशोक मुरलीधर घोरपडे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, अहमदनगर कॉलेज, अहिल्यानगर, महाराष्ट्र.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18330490

ABSTRACT:

आधुनिक युग में प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन की गति अधिक है। इस गति में विज्ञान, कंप्यूटर तथा एआई का योगदान महत्वपूर्ण है। कंप्यूटर, रोबोटिक्स, डिजिटल प्रौद्योगिकी, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा, व्यापार, संचार, कला आदि में सुलभ परिवर्तन किए हैं। विज्ञान, व्यापार, प्रौद्योगिकी, कृषि, मेडिकल, सृजन, कला, भाव, विचार, निर्णय, लेखन, चिकित्सा, साहित्य एवं भाषा क्षेत्र में एआई अनिवार्य हिस्सा बन रहा है। साहित्य एवं भाषा का विकास एआई से संभव दिखाई दे रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक तकनीक है, जिसने साहित्य तथा भाषा में परिवर्तन की लहर निर्माण कर दी है। भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं सभ्यता एआई से प्रभावित हो रही है। एआई के सहयोग से विश्व की सभी भाषाओं एवं साहित्य में अनेक सकारात्मक बदलाव सामने आ रहे हैं। भारत में विविध भाषाएँ हैं, जिनमें एआई की मदद से भाषा एवं साहित्य का विकास हो रहा है।

KEYWORDS:

एआई, साहित्य, भाषा, अनुवाद, एनएलपी, शिक्षा, अनुसंधान, मानव।

वैश्वीकरण में तकनीकी क्रांति से सभी क्षेत्र गतिशील हो रहे हैं। मानव के विकास में महत्वपूर्ण कड़ी भाषा होती है। भाषा के साथ एआई जुड़ जाने से विकास की अधिक संभावनाएँ बढ़ती जा रही हैं। भारत में विविध प्रादेशिक भाषाएँ एवं बोलियाँ हैं। प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से संचार में सुविधा निर्माण हुई है। मनोरंजन, उद्यम, विज्ञापन, राष्ट्रीय एकता आदि दृष्टि से हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। नई तकनीक ने सभी भाषाओं को प्रभावित किया है। हिंदी भाषा एवं साहित्य पर एआई द्वारा सकारात्मक प्रभाव निर्माण किया जा रहा है। एआई संबंधी चुनौतियों का सामना करते हुए विश्व में भाषा का विकास करना होगा। इस आलेख में हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के विकास में एआई के योगदान को विवेचित किया है।

आर्टिफिशियल का मतलब 'कृत्रिम' है। कृत्रिमता में प्राकृतिक रूप में बदलाव करना या उसकी नकल तैयार करना माना जाता है। इंटेलिजेंस को हिंदी में बुद्धिमान कहा जाता है। यह बुद्धिमत्ता किसी भी क्षेत्र में प्रयोग की जा सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को कृत्रिम बुद्धिमत्ता कह सकते हैं। कंप्यूटर विज्ञान की एआई एक शाखा है। एआई द्वारा मानवीय बुद्धि का कार्य मशीन के माध्यम से किया जा रहा है। सोचने, समझने, निर्णय एवं विवेक को कंप्यूटर द्वारा गतिशीलता दी जा रही है। एआई में मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग, स्पीच रेकग्निशन और जनरेशन आदि प्रमुख हैं। भाषा प्रसंस्करण में लैंग्वेज प्रोसेसिंग द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है। एआई के माध्यम से मशीनें इंसानों की तरह सोचने, समझने, निर्णय, संवाद एवं कार्य के लिए सक्षम बनाई जा रही हैं।[1]

भारत में आज हिंदी और उसकी बोलियाँ विभिन्न राज्यों में प्रयोग की जाती हैं। हिंदी भाषा नेपाल, सूरीनाम, त्रिनिदाद, मॉरीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भारतीय लोगों एवं मीडिया द्वारा पहुँचती है। विश्व के विविध विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन उपलब्ध है। एआई का महत्व साहित्य एवं भाषा में बढ़ता जा रहा है। मानवीय जीवन में भाषा संप्रेषण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। एआई से संवाद में गतिशीलता आ जाती है। हिंदी भाषा एआई की तकनीकी मदद से सहज, सरल एवं उपयुक्त स्थान प्राप्त कर रही है। हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्व में पहचान बना रहा है। हिंदी आज सृजन के साथ-साथ रोजगार, व्यापार, विज्ञापन तथा मनोरंजन का प्रभावी माध्यम बन रही है।

विश्व में अनुवाद आवश्यक है, क्योंकि किसी मनुष्य को विश्व की सभी भाषाओं का ज्ञान होना असंभव है। इसलिए विश्व में अनुवाद महत्वपूर्ण विधा है। भारत में भाषाई विविधता है, इसलिए संपर्क हेतु अनुवाद आवश्यक है। एआई की मदद से उपयोगी एवं स्पष्ट अनुवाद किए जा रहे हैं। गूगल ट्रांसलेट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर जैसे प्लेटफॉर्म अनुवाद क्षेत्र में गहराई से कार्य कर रहे हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन द्वारा वाक्य की संपूर्णता को समझा जाता है और उसका भावार्थ अनुवाद प्रस्तुत करता है। स्पीच-टू-टेक्स्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच, आवाज सहायक तथा वाक् पहचान एक महत्वपूर्ण पहल है। एआई द्वारा अनुवाद के शब्द, वाक्य, पाठ आदि को ध्यान में रखते हुए अनुवाद मिल जाते हैं। इसलिए अनुवाद में एआई के विविध प्रयोग सफल सिद्ध हुए हैं, जिससे समाज को एक-

दूसरे को जानना आसान हो रहा है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय ज्ञान विश्व में तथा विश्व का ज्ञान भारतीय लोगों तक पहुँच जाता है। व्यापार, शिक्षा, तकनीक तथा मनोरंजन का क्षेत्र अनुवाद के कारण विश्व में सहज उपलब्ध हो जाता है। हिंदी के साथ सभी भाषाओं के अनुवाद में एआई की भूमिका नज़रअंदाज़ नहीं की जा सकती।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में 'प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण' एक शाखा है।[2] इसमें मूल पाठ, आवाज, भाषा, संकेत और चित्रों को परिभाषित किया जाता है। नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग मानवीय भाषा, भावना एवं व्यवहार को मशीन को समझाने में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। एनएलपी द्वारा कंप्यूटर को मानवीय भाव तथा भाषा जानने, भाषा निर्माण करने और उसमें परिवर्तन करने में मदद हो जाती है। न्यूरो-लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग में विचार, भाव, भाषा और व्यवहार को समझकर आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है। इससे किसी मनुष्य के जीवन में अधिक प्रभावी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। व्यक्ति बाहरी क्रियाओं को अपनी इंद्रियों द्वारा विविधता से आत्मसात करते हुए समझता है। दिमाग उपलब्ध जानकारी का विश्लेषण करता रहता है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करता है। मनुष्य की भाषा उसके विकास में महत्वपूर्ण होती है। इसलिए व्यक्ति की भाषा के द्वारा विचार एवं भावना के सकारात्मक या नकारात्मक पहलुओं को समझा जा सकता है। विचार भाषा को और भाषा कार्य को प्रभावित करती है। व्यक्ति की आदतें भिन्न-भिन्न होती हैं। आदतों से व्यक्ति नियंत्रित हो जाता है और यही आदतें उसका अनुभव बनती हैं। मनुष्य का अनुभव बाद में विश्वास में परिवर्तित होता है। एनएलपी द्वारा मानव के विचार एवं भाव को विकसित करने में सहायता हो रही है। एनएलपी द्वारा आत्मविश्वास तथा विवेक निर्माण करने में आसानी होगी। एनएलपी एक सुविधापूर्ण तकनीक है, जो चिकित्सा, तनाव, व्यवसाय, तकनीक तथा विज्ञान के क्षेत्र में प्रभावी साधन बन रहा है।[3] एनएलपी का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों के साथ साहित्य एवं साहित्यकार की भाषा एवं संवेदना को स्पष्टता से समझने में महत्वपूर्ण है।

एआई तकनीकों के उपयोग से भाषा में विविध कार्य संभव हो पा रहे हैं। सृजन के अंतर्गत हिंदी में समाचार, कविता, निबंध, नाटक, कहानी तथा विज्ञापन लेखन में एआई सक्षम बन रहा है। इस तरह व्यावसायिक तथा रचनात्मक लेखन में एआई का योगदान बढ़ता जा रहा है। एआई के माध्यम से चैटजीपीटी में विभिन्न प्रश्नों का उत्तर मिलता है। लामा-

3, फेसबुक-मेटा द्वारा निर्मित भाषा का एक मॉडल है। 'लामा' हिंदी के लिए चैटबॉट, टेक्स्ट निर्माण और ऑडियो प्रोसेसिंग संबंधी कार्य करता है। शब्द, पद-बंध एवं पाठ का विश्लेषण करने में एआई गतिशील है। फोटो और वीडियो को समझने में भी एआई सक्षम बन रहा है। एआई के ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन तकनीक से स्कैन दस्तावेज़ों को डिजिटल लिपि में बदल रहा है। इससे हस्तलिखित सामग्री का डिजिटलीकरण करने में सुविधा होगी। इस प्रकार एनएलपी, चैटजीपीटी, लामा, ओसीआर आदि द्वारा भाषा विकास में सहायता प्रदान हो रही है। एआई की विविध तकनीकी मदद से केवल हिंदी भाषा का नहीं बल्कि विश्व की विविध भाषाओं के विकास में गतिशीलता प्राप्त हो रही है।

हिंदी भाषा एवं साहित्य के अनुसंधान में एआई को विशेष स्थान प्राप्त होगा। अनुसंधान में पूर्ववर्ती शोध की जानकारी प्राप्त होने में मदद होगी। शोध में पुनरावृत्ति से बचना संभव होगा। इससे शोधार्थी के परिश्रम एवं समय की बचत होगी। इससे नए-नए विषय पर शोध करने में शोधार्थियों को प्रोत्साहन मिलेगा। हिंदी भाषा एवं साहित्य में अनुसंधान के लिए एआई लाभप्रद सिद्ध होगा। एआई द्वारा अनुसंधान हेतु लेखन में विषय की प्रधानता, शब्दों की पुनरावृत्ति, वाक्य-रचना तथा शैली का विश्लेषण करने में सहायता होगी। एआई से प्राचीन, मध्ययुगीन तथा आधुनिक साहित्यकारों का विश्लेषण काल के अनुसार करना आसान हो सकता है। एआई से अनुसंधानकर्ता को शोध-विषय, सामग्री संकलन, शोध-पद्धति, वर्तनी आदि संबंधी मदद मिलती है। शोध में संदर्भ के लिए अधिकाधिक जानकारी एआई उपलब्ध कराता है। एआई से अनुसंधान में अपने लक्ष्य के लिए अधिक मात्रा में समय उपलब्ध होता है, जिससे शोधार्थी की शक्ति साधन की अपेक्षा साध्य पर अधिक केंद्रित होती है। एआई के प्रयोग से विषय की जानकारी सूक्ष्मता तथा विविधता से मिलती है, इससे अनुसंधान में मौलिकता तथा गुणवत्ता लाने में मदद होती है। अनुसंधान में एआई भी एक साधन है, जो निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए उपयोगी होता है।

शिक्षा क्षेत्र में एआई अध्यापन-अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। तकनीक के माध्यम से छात्र-छात्राओं को हिंदी भाषा तथा साहित्य सुनने, देखने, सीखने, समझने में मदद होती है। एआई द्वारा हिंदी शब्द, वाक्य, व्याकरण, शब्दावली और उच्चारण का अध्ययन किया जा सकता है। एआई के माध्यम से साहित्य में कविता एवं कहानी का विश्लेषण भी संभव है। परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रिया आसान करने में

एआई सक्षम हो रहा है। एआई तकनीक और ऑडियो-वीडियो किताब के माध्यम से छात्र-छात्राओं को अधिक लाभ होता है। ऑनलाइन सामग्री से खेत, घर, व्यवसाय आदि में काम करने वाले छात्र-छात्राएँ अपनी अकादमिक प्रगति करने में पीछे नहीं रहते। वेद, उपनिषद, पुराण एवं समसामयिक साहित्य ऑनलाइन उपलब्ध हो रहा है। इससे साहित्य के पाठकों के लिए घर बैठे खरीदने, पढ़ने एवं सुनने की सुविधा प्रदान हो रही है। अध्ययन की सामग्री की उपलब्धता होनहार छात्र-छात्राओं हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होती है। एआई अध्ययन से संबंधित विविध विषयों की जानकारी तुरंत प्राप्त कर देता है। एआई स्कूल से विश्वविद्यालय के अध्ययन-अध्यापन में गतिशील सुविधा उपलब्ध कर रहा है। भाषा को समझने के लिए आवाज़, चित्र, एनिमेशन एवं वीडियो के माध्यम से अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है। एआई के उपयोग से छात्र-छात्राओं में रूचि निर्माण होती है। एआई के कारण भाषा एवं प्रदेश की सीमा कम हो जाती है, वह विविध भाषाओं का साहित्य अपनी भाषा में प्रस्तुत कर देता है। इससे विश्व की किसी भी भाषा को सीखना आसान बन जाता है। विश्व का साहित्य पढ़ने के लिए आज सहज विविध माध्यमों में उपलब्ध हो रहा है। वैश्विक साहित्य को समझने से दृष्टि का विकास होता है, इससे जीवन में विचार एवं आचार में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। एआई से विद्यार्थियों के साथ अध्यापकों के लिए भी अनेक सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं। अध्यापन में स्पष्टता एवं रोचकता निर्माण करने हेतु एआई की अधिक मदद होती है। किसी विषय की सामान्य या विशेष जानकारी कम समय में उपलब्ध होती है। विद्यार्थियों के लिए किसी विषय को समझाने हेतु ऑनलाइन विविध संदर्भ तुरंत प्राप्त होते हैं। इससे विद्यार्थियों की संकल्पना अधिक स्पष्ट हो जाती है। शिक्षा में एआई का उपयोग विविधता से कर सकते हैं। आज शिक्षक और विद्यार्थी के बीच तकनीक का सकारात्मक सहयोग निरंतर बढ़ रहा है। इस तकनीक का लाभ सकारात्मक लिया जाना आवश्यक है। दुनिया परिवर्तनशील है। मानवता को विकसित करने में एआई की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। एआई से मानवीय बुद्धि का विकास होना महत्वपूर्ण है।[4] इस कारण आज जो शिक्षा व्यवस्था में बदलाव आ रहे हैं, उसे भी सकारात्मक लेना है।

एआई से भाषा एवं साहित्य के अंतर्गत सुविधायुक्त परिवर्तन दिखाई दे रहा है। एआई के कारण भाषा संबंधी आम लोगों से लेकर शिक्षा व्यवस्था तक सुलभता प्राप्त होती है। अनुवाद, वर्तनी, शब्दकोश, पर्यायी शब्द, उच्चारण आदि का उपयोग एआई से प्राप्त हो जाता है।

साहित्य में लेखक, प्रकाशक, पाठक आदि स्तर पर एआई का उपयोग अधिक मात्रा में किया जा रहा है। भाषा एवं साहित्य की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के लिए रोजगार तथा व्यवसाय के विविध अवसर निर्माण होते हैं। जैसे - प्रॉम्प्ट इंजीनियर, हिंदी डेटा-एनोटेटर, हिंदी भाषा में एनएलपी अनुसंधानकर्ता, हिंदी कंटेंट निर्माण विशेषज्ञ, हिंदी स्पीच ट्रांसक्रिप्शनिस्ट, हिंदी में युएक्स डिजाइनर, वॉइस विशेषज्ञ, एआई कंटेंट स्पेशलिस्ट आदि। यह कार्य करने हेतु भाषा की बेहतर जानकारी होना आवश्यक है। इन विद्यार्थियों के लिए भाषा एवं साहित्य के ज्ञान के साथ कोडिंग का ज्ञान अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। वर्तमान में भाषा एवं साहित्य के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने हेतु विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक को सीखना अनिवार्य है। कंप्यूटर, एआई तथा विशेष ज्ञान को मिलाकर व्यवसाय या रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। रोजगार का विचार किया जाए तो समाचार, संपादक, आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट, जनसंपर्क, सूत्र संचालक, विज्ञापन, व्यापार आदि क्षेत्र में भाषा का व्यापक प्रयोग किया जाता है। भाषा का प्रयोग प्रिंट, ऑडियो, वीडियो एवं मीडिया के विविध एप्स में सफलता से किया जा रहा है। यूट्यूब, फिल्म, न्यूज आदि क्षेत्र भी भाषा एवं साहित्य के अध्येता के लिए रोजगार के विभिन्न अवसर निर्माण कर रहे हैं। आज भाषा के विद्यार्थियों के लिए तकनीकी का ज्ञान लेना युग की जरूरत बन गई है। भाषा, साहित्य, समाज, संस्कृति के ज्ञान के साथ तकनीकी का सही प्रयोग करनेवालों के लिए निजी या सरकारी क्षेत्र में रोजगार के विविध अवसर उपलब्ध होते हैं। कला या मनोरंजन संबंधी रोजगार में कंप्यूटर, एआई तथा हिंदी भाषा का ज्ञान रखने वालों के लिए अधिक संभावनाएँ हैं। तकनीकी युग में रोजगार की अपेक्षा व्यवसाय में भी विविध प्रयोग किए जा सकते हैं। व्यवसाय के लिए भाषा एवं साहित्य के साथ आपको कंप्यूटर, उत्पादन, विज्ञापन, बिक्री आदि में कुशलता प्राप्त करनी होगी। भाषा तथा साहित्य के आधार पर विविध व्यवसाय या सेवा प्रदान की जा सकती है। जैसे- सूत्र संचालक, विज्ञापन, प्रकाशन, रचनात्मक लेखन, व्यावसायिक लेखन, कंप्यूटर संबंधी सेवाएं, मीडिया, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, संपादन, प्रूफरीडर आदि।

एआई द्वारा भाषा तथा साहित्य के विकास के विविध मार्ग खुल रहे हैं, किंतु इसमें विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ हैं। हिंदी को गतिशील बनाने के लिए एआई क्षेत्र में संसाधनों पर कार्य करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले टेक्स्ट और वॉईस डेटासेट बढ़ाना होगा। भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के साथ साहित्य को

विकसित करने हेतु विविध चुनौतियां होते हुए भी एआई की मदद से निश्चित रूप से विकास होगा। इन चुनौतियों को सफलतापूर्वक पार करने के लिए सरकार, उद्यमी, हिंदी प्रेमी तथा संस्थाओं को मिलकर कार्य करना आवश्यक होगा। एआई की सहायता से भविष्य में भारतीय भाषाओं के साथ सभी विदेशी भाषाओं का महत्व बना रहेगा। विश्व में भाषा और साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न समस्याएँ हैं, किंतु इन्हें एआई की मदद से दूर भी किया जा सकता है। एआई वैश्विक भाषा एवं साहित्य के लिए निश्चित रूप से लाभदायक सिद्ध होगा। भारत में भी सभी प्रादेशिक भाषाओं के विकास के साथ हिंदी का भी विकास होता रहेगा। हिंदी के विकास के साथ सभी प्रादेशिक भाषाओं के विकास में एआई का योगदान महत्वपूर्ण साबित होगा।

भारत में हिंदी की विविध बोलियाँ हैं। अवधी, ब्रज, मैथिली, खड़ी बोली, मगही, मारवाड़ी, मेवाती, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी आदि। इन बोलियों में शब्द, उच्चार एवं वाक्य में भिन्नता पाई जाती है। एआई द्वारा किए गए अनुवाद में सटीकता लाने के लिए एआई को एक चुनौतीपूर्ण कार्य करना है। विशेष रूप से मुहावरों, कहावतों, उक्तियों, सूक्तियों के अनुवाद में भी एआई के आधार पर सुधार किया जा सकता है। अनुवाद में विविध प्रसंग एवं भावनाओं के आधार पर अनुवाद करते समय भी अधिक सतर्कता की आवश्यकता होती है। एआई विविध शब्द और पाठ के आधार पर इन प्रसंगों की पहचान कर पाया तो अनुवाद अधिक सक्षम हो जाएगा। राजनीतिक, प्रादेशिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रसंगों में व्यक्त हास, परिहास तथा व्यंग्य प्रधान वाक्यों का अनुवाद प्रस्तुत करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। मानवीय संवेदनशीलता, मानसिकता, उद्देश्य एवं रचनात्मकता की लय को एआई को पकड़ पाना कठिन कार्य है। एआई के द्वारा भाषा और साहित्य में अधिक कार्य की अपेक्षा है। भारत के साथ विदेश में भी साहित्य एवं भाषा के क्षेत्र में भविष्य में अधिक सुधार होंगे, जो एआई के साथ निश्चित रूप से सफल सिद्ध होंगे। दुनिया में किसी भी भाषा का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अन्य भाषा बोलने वालों से संवाद, संपर्क एवं व्यापार करने में सक्षम बन सकता है। भारत जैसे बहुभाषी क्षेत्र में एआई के माध्यम से तुरंत होनेवाले अनुवाद की बेहद आवश्यकता होती है। भाषा और साहित्य में एआई के द्वारा हो रही प्रगति से भविष्य में निश्चित रूप से परिवर्तन दिखाई देंगे। मानवीय संवेदना, भावना, मानसिकता आदि सूक्ष्म भावनाओं को समझ पाने में एआई का नियंत्रण दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

भाषा के क्षेत्र में सरकार के 'भाषिणी' जैसे माध्यम से प्रयोग शुरू है। भारतीय भाषाओं को विकसित करने हेतु एआई की मदद काफी हद तक होती है। इससे वेबसाइट तथा इंटरनेट के माध्यम से जानकारी को प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध कराया जा रहा है। भारत में विविध भाषाओं को डिजिटल माध्यम पर लाया गया है। भारतीय विविध भाषाओं का साहित्य भी डिजिटल रूप में उपलब्ध हो रहा है। तकनीकी शिक्षा को हिंदी भाषा में उपलब्ध कराने में भारत सरकार का महत्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय भाषा संसाधन केंद्र, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन, डिजिटल इंडिया, यू.जी.सी., प्राइवेट कंपनियाँ आदि के माध्यम से भाषा, साहित्य, तकनीकी शिक्षा में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। चैट-बॉट, को-पायलट जैसे एआई टूल्स भाषा में लेखन, अनुवाद, प्रूफ-रीडिंग आदि क्षेत्र विकसित कर रहे हैं। एआई के विभिन्न प्रयोग मानव के लिए भाषा, संवाद, सूचना, जानकारी में बेहद उपयोगी पाए गए हैं।

एआई के माध्यम से भाषा में अधिक लोकोपयोगी कार्य हो रहे हैं। भाषा संवाद के साथ ज्ञान के प्रसार में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम बन रही है। एआई द्वारा भाषा का व्यापक रूप जनता तथा सरकारी कार्यों के लिए लाभदायक सिद्ध हो रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विज्ञान के साथ-साथ भाषा, साहित्य, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, व्यापार एवं राजनीति में कई संभावनाओं का निर्माण कर रहा है। एआई का भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान साबित हो रहा है। एआई से भारतीय एवं विदेशी भाषाओं का विकास गति से हो रहा है। लिखित एवं मौखिक साहित्य का आभासी मंच पर उपलब्ध होना कालातीत योगदान साबित होगा। एआई से भाषा और साहित्य के साथ-साथ संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, नैतिकता एवं मानवीयता का भी प्रचार होता है। एआई के विकास से भाषा, साहित्य एवं संस्कृति वैश्विक स्तर पर पहुँच जाती है। निष्कर्ष के रूप में कहा जाए तो कंप्यूटर, एआई, विज्ञान यह एक साधन के रूप में मानव एवं पर्यावरण के लिए जब हितकारक होते हैं, तब उनका महत्व कालातीत बन जाता है। इस सृष्टि में पर्यावरण, पर्यावरण में मनुष्य, मनुष्य में विकास, विकास में विज्ञान तथा विज्ञान में अध्यात्म होना महत्वपूर्ण होता है।

संदर्भ:

1. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से परिचय - संजय कुमार, निदेशक, सी डी अनुभाग, डी जी टी, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार, सं. 2024, पेज नं. 14
2. https://www.deeplearning.ai/resources/natural-language-processing/
3. https://www.healthline.com/health/nlp-therapy
4. https://hbr.org/2021/03/ai-should-augment-human-intelligence-not-replace-it, by David De Cremer and Garry Kasparov March 18, 2021

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.